## श्रम विभाग

## ग्रादेश

## दिनांक 4 जून, 1986

सं ब्रो विविधि पोली कि जिन 14/7, मथुरा रोड़, फरीदावाद, के श्रीमिक श्री इन्द्र कुमार, मार्फत राष्ट्रीय मजदूर संघर्ष यूनियन (रिजिं), प्लाट नं ए-408, टूल रूम द्रेनिंग मैन्टर के सामने ब्रौ द्यौगिक श्रोव. दिल्ली-110052 तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ब्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिन्ष्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्याश्री इन्द्र कुमार झा की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस <mark>राहत का</mark> हकदार है ?

सं श्रो विव /एफ.डी./61-86/19136 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं विविध पोली पैकेंजिंग 14/7, मथुरा रोड़, फरोदावाद, के श्रमिक श्री महेन्द्र सिंह. मार्फत राष्ट्रीय मजदूर संघर्ष यूनियन (रिजिंव), प्लाट नंव ए-408, टूल रूम ट्रेनिंग मन्दर के मामने श्रोगींगिक क्षेत्र, दिल्ली-110052 तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई क्रीबोगिक विवाद है;

ग्रीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हिरयाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना मं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना मं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधि-सूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री महेन्द्र सिंह, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./एफ.डी./गुड़गोवां/20-86/190 11.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ (2) जनरल मैनेजर, हरियाणा रोड़वेज, गुडगांवा, के श्रमिक श्री सरूप सिंह, पुत्र श्री राम फूल, गांव शमशेरपूर, जिला गाजिया-बाद (यू.पी.) सथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर भूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद मिंधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रीधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त भ्रीधसूचना की धारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सरूप सिंह, सपुत्र श्री राम फूल, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?